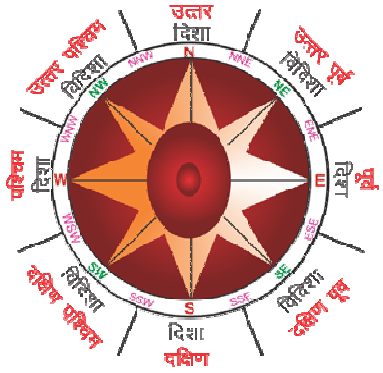

‘ घर वास्तु’

वास्तु शास्त्र में ईशान कोण (North/East), नैऋत्य कोण (South/West), वायव्य कोण (North/West), अग्नि कोण (South/East) का काफी महत्व है। वास्तु शास्त्र की आधारशिला इसी पर निर्भर करती है। सामान्यता एक वास्तु के अनुसार घर में कुछ विशेष स्थान निर्धारित किए गए हैं जो निम्न हैं। नीचे चित्र में कई स्थानों को एक या दो से अधिक बार भी दर्शाया गया है परन्तु इस बात का ध्यान रखें जो स्थान कहीं पर नही दर्शाया गया है उसका दोष लगेगा जिसका परिहार करना या करवाना अनिवार्य है।

एक घर के साधारण स्थान, निम्न स्थानों पर होने चाहिए

विशेष दिशाओं में मुख्य द्वार होने पर कुछ विशेष दिशा निर्देश।

पूर्वमुखी द्वार (East facing door)

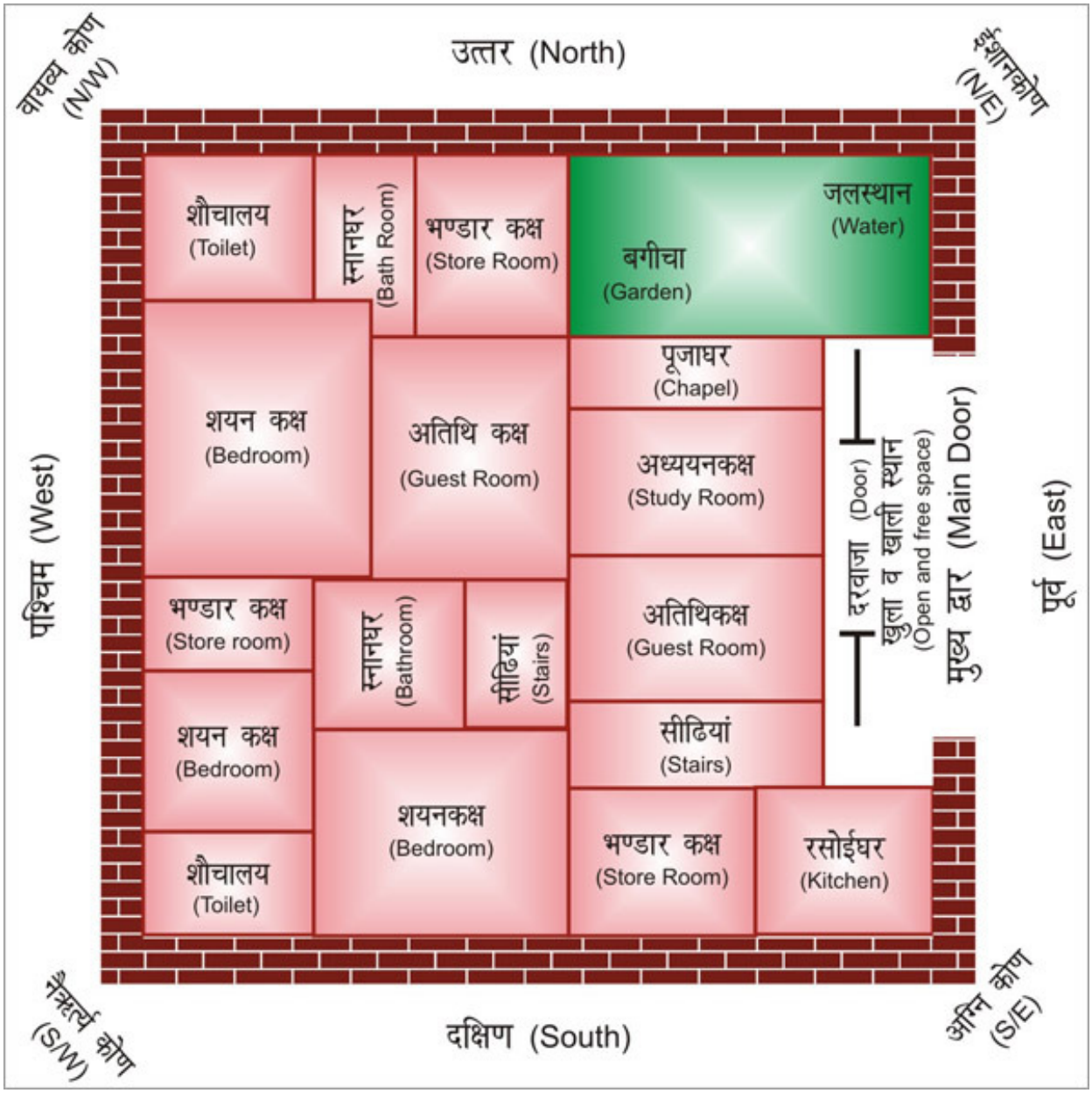

उत्तरमुखी द्वार (North facing door)

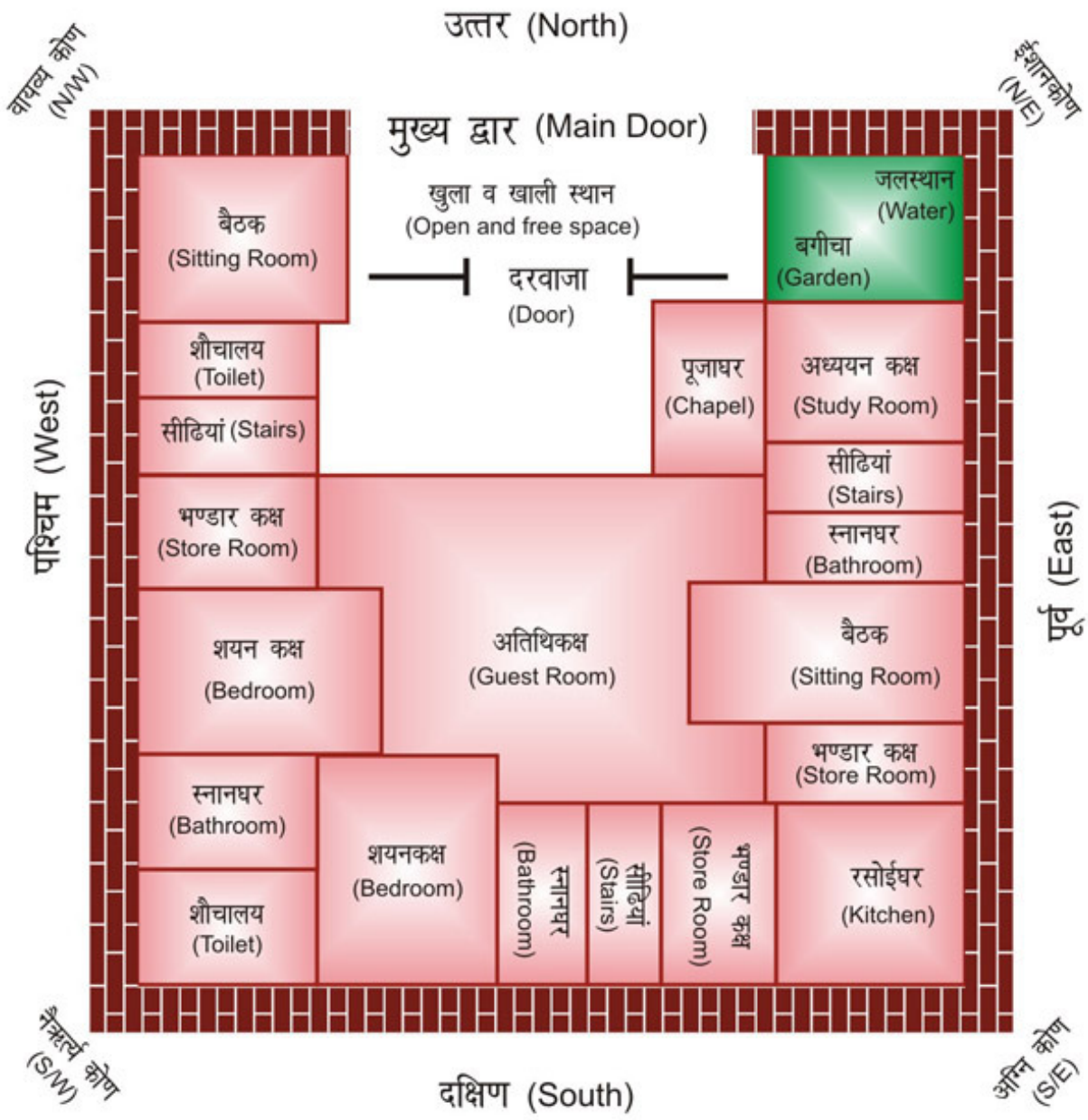

पश्चिममुखी द्वार (West facing door)

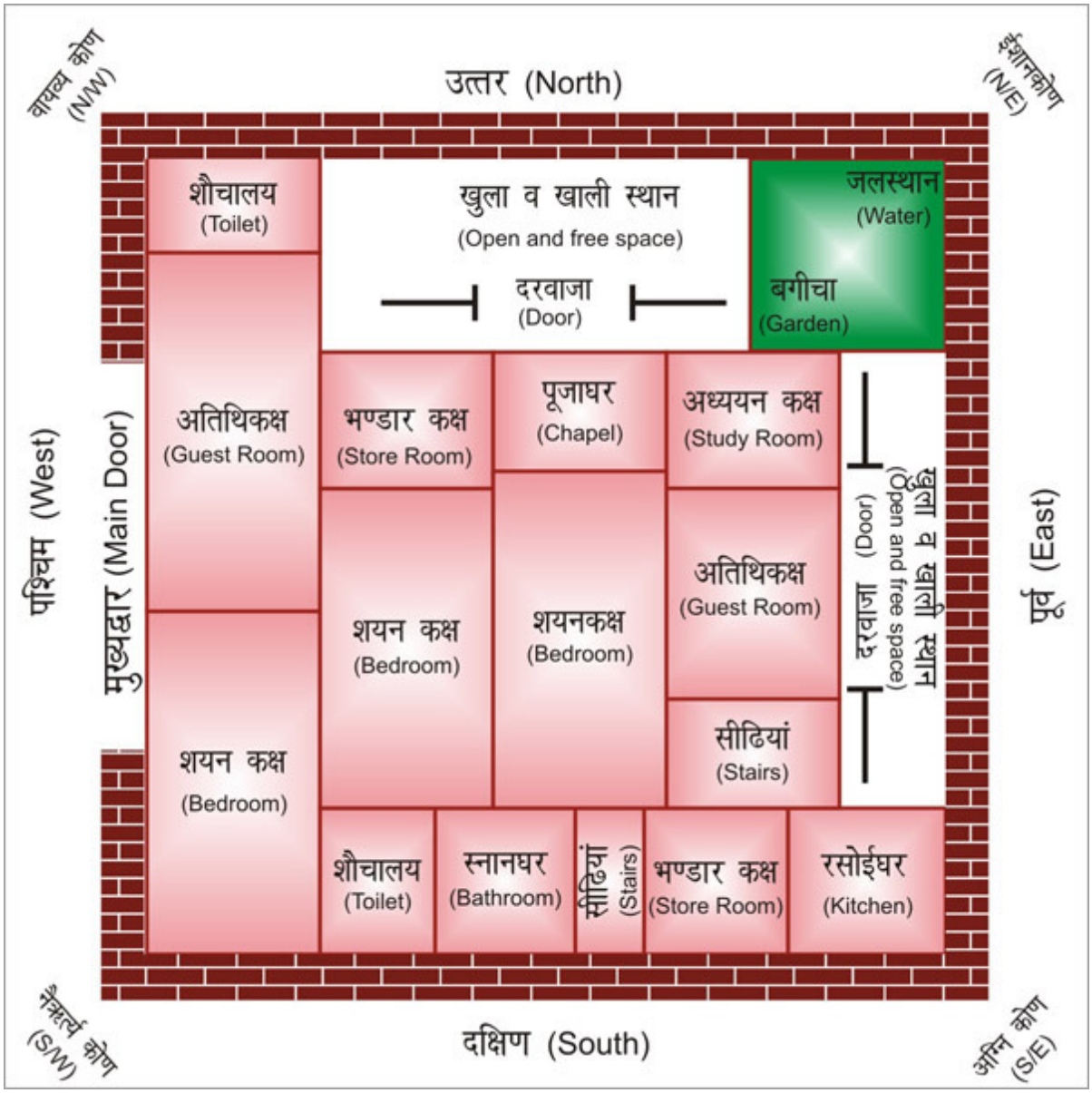

दक्षिणमुखी द्वार (South facing door)

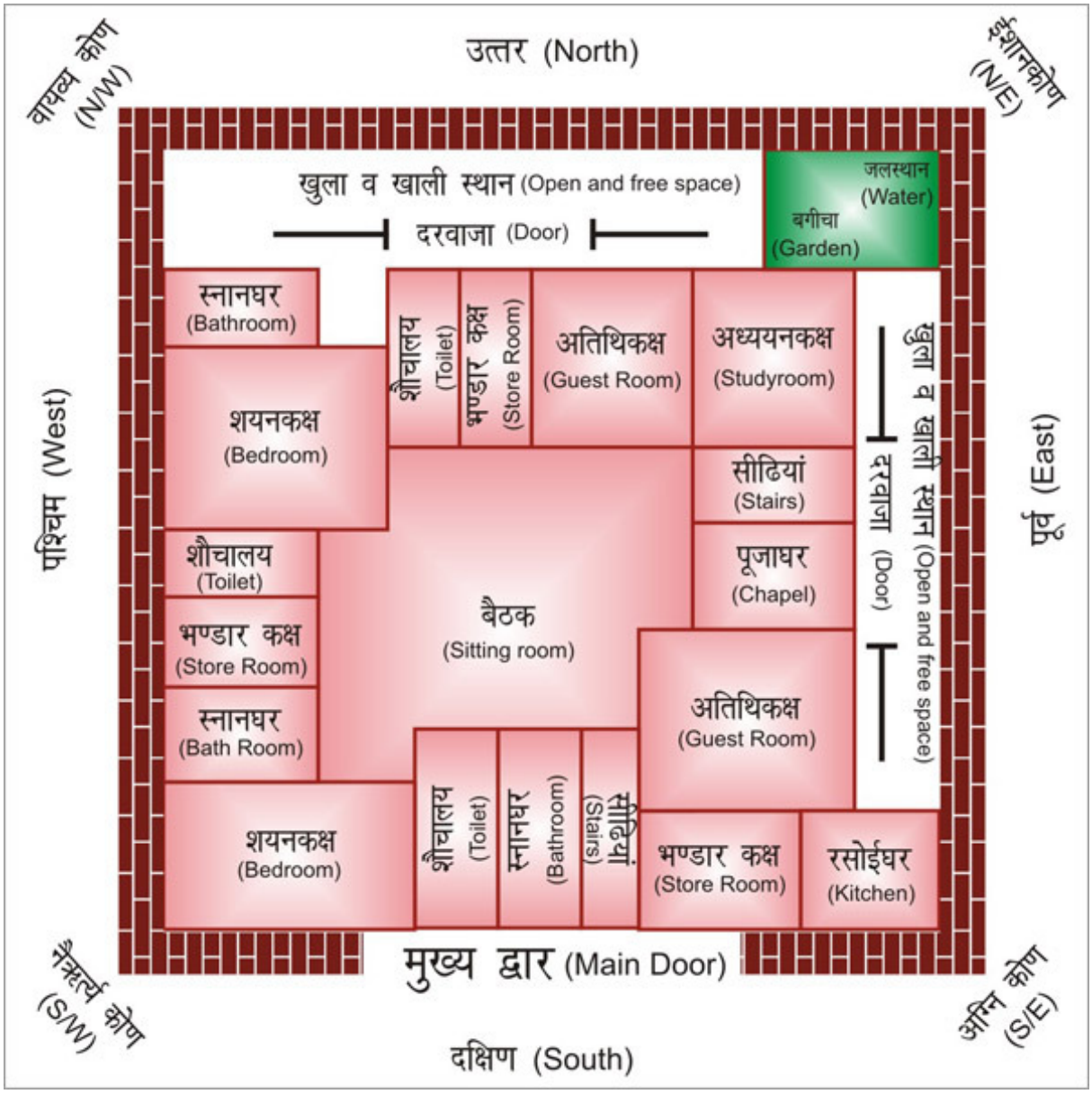

अधिक सूक्ष्मता से अध्ययन करने के लिए श्री वराहमिहिर ने आठ वीथियां, अट्ठारहा प्रकार के वास्तु और ग्यारह प्रकार के वेधों के बारे में बताया है।